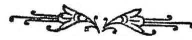


देवता-परिचय-ग्रन्थ-माला।

द्वितीय ग्रन्थः।

३३ देवताओंका विचार।



लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा).

द्वितीयवार १०००.



संवत् १९७८, शक १८४३, सन १९२१.

मूल्य तीन आने.

स्वाध्याय मंडलके पुस्तक।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या। **नरमेध**। "**मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन**।" मूल्य १) एक रु.।

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या। **सर्वमेध**। "**एक ईश्वरकी उपासना**।" मू. ॥) आठ आने। (द्वितीयवार मुद्रित)

(३) य.अ. ३६ की व्याख्या। **शांतिकरण**। "**सच्ची शांतिका सच्चा उपाय**" मू.॥) आठ आने। (द्वितीयवार मुद्रित)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथ-माला।

(१) **रुद्र देवताका परिचय**। मू. ॥) आठ आने।

(२) **ऋग्वेदमें रुद्र देवता**। मू. ॥=) दस आने।

(३) **३३ देवताओंका विचार**। मू. ≡) तीन आने।

(४) **देवता विचार**। मू. ≡) तीन आने।

[३] योग-साधन-माला।

(१) **संध्योपासना**। योग की दृष्टिसे संध्या करनेकी प्रक्रिया इस पुस्तकमें लिखी है। मू. १॥) (द्वितीयवार मुद्रित)

(२) **संध्याका अनुष्ठान**। मू. ॥) आठ आने।

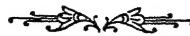
(३) **वैदिक-प्राण-विद्या**। (प्राणायम-पूर्वार्ध) मू. १) रु.

(४) **प्राणायाम** ....
(५) **आसन** ....
(६) **ब्रह्मचर्य-** ....
} छप रहे हैं।



देवता-परिचय-ग्रंथ-माला ।

द्वितीय ग्रन्थः ।



३३ देवताओंका विचार ।



लेखक और प्रकाशक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा.)



द्वितीय वार १०००



संवत् १९७८, शके १८४३ सन १९२१

प्रास्ताविक कथन।



वैदिक सारस्वतका पठनपाठन करनेके समय ३३ देवताओंके स्वरूपविज्ञानकी अत्यंत आवश्यकता है। ३३ देवताओंका ठीक परिज्ञान न होनेके कारण बड़े बड़े विद्वानोंसे भयानक अशुद्धियां हो गईं हैं, इस लिये इस निबंधमें ३३ देवताओंका विचार प्रस्तुत किया है। विचारी सज्जन यदि योग्य सहायता देगें, तो शीघ्रहि इस विषयका उचित्त निश्चय हो जायगा।

श्री० मंत्री साहित्यपरिषद, गुरुकुल–कांगडी (जि. बजनौर) की ओरसे किसी वैदिक विषयपर निबंध लिखनेकी प्रेरणा मुझे हो गई। वैदिक वाङ्मयमें इस विषयके समान दूसरा कोई महत्वपूर्ण विषय न होनेके कारण मैंने यही विषय चुन लिया। और थोड़े समयमें जो कुछ साधन एकत्रित हो सके, यहाँ संगृहित किये हैं। आशा है कि सुविज्ञ पाठक इस विषयकी अधिक खोज करेंगे।

औंध (जि. सातारा)
१६।३।२०

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.
स्वाध्याय–मंडल.

ॐ

३३ देवताओंका विचार ।



(१) वेदमें ३३ देवता ।

वेदमें ३३ देवताओंका उल्लेख अनेक स्थानोंपर आता है। देखिए—

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ॥
तान्रोहिदश्व गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतमावह ॥

ऋ. १।४५।२

'हे रोहिदश्व अग्ने ! दानशीलोंकी उन्नति करनेवाले विशेष ज्ञानी जो देव हैं, उन (त्रयः त्रिंशतं) तीन और तीस देवोंको ले आओ' तथा—

इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ
त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः ॥

ऋ. ८।३०।२

'इस प्राकर प्रशंसा करने योग्य, (रिशादसः=रिश + अदसः) शत्रुका नाश करनेवाले, (मनोः देवाः) मनुष्योंके देव (त्रयः त्रिंशत) तीन और तीस हैं, ये सब (यज्ञियासः) पूजनीय हैं।' इस मंत्रमें '**मनोः देवाः**'[1] अर्थात् 'ये मनुष्योंके देव हैं' ऐसा कहा हैं। इससे सूचित होता है कि ये मानव जातिमें अथवा हरएक मनुष्यमें होंगे अथवा मनुष्योंके द्वारा पूजने योग्य होंगे। तथा—

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन्।
विदन्न ह द्वितासनन्॥

ऋ. ८।२८।१

'जो (त्रिंशाति) तीस और (परः त्रयः) ऊपर तीन देव (बर्हिः[2]) यज्ञमें बैठते हैं और सब कुछ जानते हैं वे दोनों प्रकारका धन देवें।' इस मंत्रमें यज्ञमें बैठनेवाले ज्ञानी ३३ देवताओंका वर्णन है। तथा—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः॥
स्कंभं तं ब्रूहि कतमस्विदेव सः॥ १३॥

---

१ **मनु**=A Man, Mankind मनुष्य, मानवजाति; Thought विचार, Mental Faculty मानसिक शक्ति; मंत्र॥

२ **बर्हिः**—यज्ञ, आकाश (Ether), जल, सुगंध, अग्नि, तेज चमक, शोभा, अंतरिक्ष, मन आदि भाव इस शब्दके हैं।

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा निधिं रक्षन्ति सर्वदा ॥
निधिं तमद्य को वेद यं देवा अभिरक्षथ ॥ २३ ॥
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥
तान्वै त्रयस्त्रिंशद्देवानेके ब्रह्मविदो विदुः ॥ २७ ॥

—अथर्व. १०।७

तेहत्तीस देव जिसके अंगमें समाये हैं, उसको सर्वाधार ईश्वर कहो, वह ही अत्यंत सुखदाता है ॥ तेहत्तीस देव जिसके निधिका सर्वदा संरक्षण करते हैं, उस निधिको कौन जानता है ॥ तेहत्तीस देव जिसके शरीरमें अवयव बने हैं, उन तीन और तीस देवोंको अकेले ब्रह्मज्ञानी ही जानते हैं ॥ ' इस मंत्रमें कहा है कि परमेश्वरके शरीरमें ये तेहत्तीस देव रहते हैं, परमेश्वरके निधिका संरक्षण करते हैं और परमेश्वरके शरीरके अवयवोंमें ये विभक्त हो गये हैं । इनको सब लोक नहीं जान सकते, परंतु ब्रह्मज्ञानी लोक हि इनको पूर्णतासे जानते है । तथा—

त्रयस्त्रिंशद्देवास्तान् सचन्ते
स नः स्वर्गमभि नेष लोकम् ॥

अथर्व. १२।३।१६

' तेहत्तीस देवता उन कर्मोंका सेवन करते हैं । वह हम सबको स्वर्गको पहुँचाता हैं । ' तथा—

त्रयस्त्रिंशद्देवता स्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्वन्तः ॥ अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्धिरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि ॥

—अथर्व. १९।२७।१०

' तेहत्तीस देवता और तीन प्रकारके वीर्य हैं। प्रेममय आचरण करनेवाले उन वीर्योंको कर्मोंके अंदर सुरक्षित रखते हैं। इस आनंदके अंदर जो तेज है, उस तेजसे यह मनुष्य वीर्ययुक्त प्रयत्न करता है।' इस मंत्रमें ३३ देवोंके साथ तीन वीर्योंका संबंध बताया है। एक एक वीर्यके साथ ग्यारह देवताएं होतीं हैं, ऐसा यहां प्रतीत होता है। तथा—

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नाना रथं वा विभवो ह्यश्वाः ॥ पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥

ऋ. ३।६।९ अथर्व. २०।१३।४

' हे अग्ने! एक रथमें अथवा नाना प्रकारके रथोंमें बैठकर इनके साथ इस और आ जाओ। क्यों कि घोडे हि धन है। पत्नियोंके समेत तीस और तीन देवोंको ले आओ और तृप्त रहो।' इस मंत्रमें ३३ देवताओंकीं स्त्रियां, धर्मपत्नियां हैं, ऐसा स्पष्ट कहा है। तथा—

समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद् वावृधानः ॥
त्रिभिर्देवैस्त्रिंशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं विदुरो ववार ॥

यजु. २०।३६

'तेजस्वी, चपल और उन्नतिशील इंद्रने, प्रातःकालमेंहि जागते हुए, तीन और तीस देवताओंके साथ वृत्रका हनन किया।' तेहेत्तीस देव इन्द्रके सहाय्यक हैं ऐसा इस मंत्रमें कहा है। इस प्रकार तेहत्तीस, तीन और तीस, अथवा तीस और तीन देवोंका वर्णन वेदमें है। अब यह ही भाव अन्य रीतीसे वर्णन किया है देखीए:—

[२] तीन गुणा ग्यारह देव।

(३×११=३३ देव)

उक्त ३३ संख्या भिन्न प्रकारसे निम्न मंत्रोंमें वर्णन की है—

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशाः सुराधसः ॥
बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सवे ॥
देवो देवैरवन्तु मा ॥

यजु. २०।११

'तीन गुणा ग्यारह अर्थात् ३३ देव उत्तम सिद्धि देनेवाले हैं।' तथा—

अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्याक्षेति विदथा कविः ॥
स त्रीँ रेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः ॥
परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे ॥

—ऋ. ८।३९।९

'कवी अग्नि तीन त्रिधातुओंमें रहता है। वह विप्रदूत तीन गुणा ग्यारह देवोंको पूजता और तृप्त करता है।' तथा—

युवा देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददृशे पुरस्तात् ॥
अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीध्यदग्नी ॥

(वालखिल्य) ऋ. ८।९७।२

'आप तीन गुणा ग्यारह सत्यदेव सत्यके अग्रभागमें दीख रहे हैं। हमारे यज्ञका सेवन करो।' इसमें कहा है कि ये ३३ देव सत्यस्वरूप हैं और सत्यके सन्मुख रहते हैं तथा—

तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वेदेवास्त्रय एकादशासः ॥

ऋ. ९।९२।४

'हे पवमान सोम। तेरे अद्भुत स्थानमें तीन गुणा ग्यारह अर्थात्

(विश्वे देवाः) सब देव हैं। ' सोमके स्थानमें ३३ देव रहते हैं ऐसा इस मंत्रमें कहा है। तथा—

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयम-श्विना ॥ प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषोभवतं सचाभुवा ॥

यजु. ३४।४७ ऋ. १।३४।११

' हे नासत्य अश्विनो ! तीन गुणा ग्यारह देवोंके साथ यहां मधुपानके लिये आइए, आयु बढाईए, दोषोंका दूर कीजिये, आपसके द्वेषका नाश कीजिये और सत्यके साथ हो जाइए । ' इस मंत्रमें ३३ देवोंका कर्म वर्णन किया है। आयुकी वृद्धि करना, दोष दूर करना, द्वेषभावका नाश करना और सत्यके साथ रहना ये इन देवोंके कार्य हैं। तथा—

विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशै रिहाद्भिर्मरुद्भि र्भृगुभिः सचाभुवा ॥

ऋ. ८।३५।३

' सब देवों अर्थात् तीन गुणा ग्यारह देवोंके तथा आप् , मरुत् और भृगुओंके साथ यहां आइए ' । इस मंत्रमें सब मिलकर ३३ ही देव हैं ऐसा कहा है। इस प्रकार तीन गुणा ग्यारह देवोंका वर्णन वेदमें है। पूर्वोक्त ३३ ही देव ये तीन गुणा ग्यारह (३×११=३३) हैं। अब इनके स्थान देखीए:—

[३] तीन गुणा ग्यारह देवोंके स्थान ।

इनके लिये ३३ स्थान प्रजापतीने निर्माण किये हैं ऐसा वर्णन अथर्ववेदमें है देखीए—

एतस्माद्वा ओदनात् त्रियस्त्रिंशतं लोकान्निरमिमीत प्रजा-पतिः ॥ ५२ ॥

अथर्व ११।९

'इस ओदनसे प्रजापतिने ३३ लोक निर्माण किये।' अर्थात् उक्त ३३ देव वसनेके लिये ये ३३ स्थान निर्माण किये गये ऐसा प्रतीत होता है। यद्यपि उक्त ३३ देवोंका इन ३३ लोकोंके साथका संबंध किसी वेदमंत्रमें मैंने अबतक नहीं देखा। परंतु मुझे ऐसा प्रतीत होता है इस लिये यहां लिखा है। इस विषयमें अधिक खोज करना आवश्यक है। अस्तु अब इस त्रिलोकीमें इन ३३ देवताओंका स्थान देखीए:—

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामेकादशस्थ। अप्सु क्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥

ऋ. १।१३९।११; यजु. ७।१९

'जो ग्यारह देव द्युलोकमें हैं, जो ग्यारहःपृथ्वीपर हैं और जो

ग्यारह (अप्सु) * अंतरिक्षमें अपनी शक्तिसे रहते हैं वे (३३ देव) इस यज्ञमें प्राप्त होवें । ' इस मंत्रमें कहा है कि ग्यारह ग्यारह देव तीन स्थानपर बांटे हैं । यही भाव अथर्ववेदके मंत्रमें कहा है—

ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥११॥
ये देवा अंतरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो० ॥ १२ ॥
ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते० ॥१३ ॥

अथर्व. १९।२७

' आकाशमें जो ग्यारह देव हैं, जो अंतरिक्षमें ग्यारह देव हैं और जो पृथिवीमें ग्यारह देव हैं वे इस हवनका सेवन करें ।

इस प्रकार ३३ देवताओंकी व्यवस्था वेदमंत्रोंमें लिखी है। अस्तु । इस समय तकके व्याख्यानसे निम्न बातें सिद्ध हो चुकीं हैं—

---

* ऋ. १।१३९।११ में म. ग्रिफिथ साहब ' **अप्सु क्षितः** ' का भाषांतर Who......live in water (जो जलमें रहते हैं) ऐसा करते हैं । यजुर्वेदमें अ. ७।१९ में भी इसी प्रकार भाषांतर किया है और टिप्पणीमें water of air अर्थात् हवाका जल, ऐसा लिखा है । परंतु यह अशुद्ध है । अथर्व वेदमें कां. १९।२७।१२ में ' **अप्सु** ' के स्थानपर, **अंतरिक्षे** ' शब्द आगया है । अर्थात् वेदकी परिभाषामें ' **अप्सु** ' का अर्थ ' **अंतरिक्षे** ' है । वेदके पाठभेद देखनेसे वेदका अर्थ इस प्रकार ज्ञात हो सकता है ।

[४] ३३ देवोंके विषयमें वेदकी संमति

(१) देवताएं ३३ हैं।

(२) तीस और तीन कहनेसे, तीन मुख्य और तीस

(३) तीन गुणा ग्यारह कहनेसे, इनके अंदर ग्या ओंके तीन वर्ग हैं। और प्रत्येक वर्गमें एक मुख्य गौण हैं।

(४) तेहत्तीस देवताओंके भिन्न भिन्न ३३ स्थान हैं

(५) पृथ्वीपर ग्यारह, अंतरिक्षमें ग्यारह और द्युलोक ऐसे इनके तीन वर्ग तीन स्थानोंमें रहते हैं।

(६) तीन लोकोंमें ग्यारह, ग्यारह कहनेसे, किसी लोक न्यून वा किसीमें ग्यारहसे अधिक नहीं हैं, यह बात स्वयं

इतनी बातें पूर्वोक्त मंत्रोंके प्रमाणसे सिद्ध हो चुकीं देखना है कि पूर्वोक्त मंत्रोंके प्रमाणसे इन देवताओंके औ गुण व्यक्त हुए हैं—

(१) देवताएं ३३ हैं इसमें संदेह नहीं; परंतु ३३ भिन्न अग्नि आदि देवताएं हैं। इसके प्रमाण देखीए—

'**हे अग्ने ! त्रयस्त्रिंशतमावह**' (ऋ. १।४५।२ ३३ देवताओंको ले आओ।

'**अग्निः त्रीनेकादशान् यक्षत्** (ऋ ८।३९।९ ३३ देवताओंका पूजन करता है।' **हे अग्ने ! पत्नीवत**

देवान् आवह। (ऋ. ३।६।९॥ अथ २०।१३।४) हे अग्ने ३३ देवताओंको धर्मपत्नियोंके समेत ले आओ ॥ इन मंत्रोंसे सिद्ध है कि उक्त ३३ देवताओंसे भिन्न अग्निदेव है ।

'**इन्द्रः त्रिभिः देवैः त्रिंशता वृत्रं जघान ।** (य. २०।३६) तेहत्तीस देवताओंके साथ रहकर इंद्रने वृत्रका वध किया ॥ इस मंत्रसे सिद्ध है कि उक्त ३३ देवताओंसे भिन्न इन्द्र देवता है ।

'**त्रयस्त्रिंशा देवा बृहस्पतिपुरोहिता सवितुः सवे ।**' (य. २०।११) जिनका पुरोहित बृहस्पति है ऐसे ३३ देव सूर्यके उदयके समय रहते हैं ॥ इस मंत्रसे सिद्ध है कि बृहस्पति और सूर्य-सविता-से भिन्न उक्त ३३ देवताएं हैं ।

'**आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः इह आयातं ।** (ऋ. १।३४।११। यजु. ३४।४७) हे अश्विनौ ! ३३ देवताओंके साथ यहाँ आइए । तथा—

'**अश्विना त्रय एकादशासः देवा ।** (ऋ. ८।९७।२ वाल-खिल्य) इस मंत्रसे अश्विनौ देव उक्त ३३ देवताओंसे भिन्न हैं ऐसा सिद्ध होता है ।

'**हे सोम तव निण्ये त्रय एकादशासः ।**' ऋ. (९।९२।४) हे सोम तेरे स्थानमें तीन गुणा ग्यारह देव हैं ॥ इस मंत्रसे व्यक्त होता है कि सोमदेवतासे भिन्न ३३ देव हैं ।

ऋ. ८।३५।३ मंत्रसे '**आप्, मरुत्**' इन दो देवताओंसे भिन्न उक्त ३३ देवतायें हैं यह बात स्पष्ट होती है ।

तात्पर्य इस प्रकार (१) **अग्नि**, (२) **इन्द्र**, (३) **बृहस्पति**, (४) **सविता**, (५) **अश्विनौ**, (६) **सोम**, (७) **आपः** (८) **मरुतः**, इन देवताओंसे भिन्न उक्त तेहत्तीस देव हैं ।

अथर्व कां. १०।७।१३,२३,२७ में स्कंभ अर्थात् जगदाधार परमात्माके अंदर ३३ देव हैं। ऐसा कहा है, इसलिये '**स्कंभ**' देवसे उक्त ३३ देवता भिन्न है, यह स्पष्ट सिद्ध है। इसीमंत्रके '**क–तम**' शब्दसे '**कः**' देवताका ग्रहण किया जाय तो यह भी एक भिन्नदेवता माननी पडती है। तथा '**कः**' का अर्थ '**प्रजापति**' है, यदि इसी प्रजापति द्वारा ३३ देवताओंके ३३ स्थान बन गये हैं, ऐसा माना गया, तो इनसे '**प्रजापति**' देवता भी अलग माननी पडेगी। अर्थात् (९) **स्कंभ**, (१०) **कः** (११) **प्रजापति** इतने देव उक्त ३३ देवताओंसे भिन्न हैं, ऐसा मानना पडता है। अंतिम दो देवोंके विषयमें अभी तक पूर्ण निश्चय नहीं है, तथापि शेष ९ देव भिन्न हैं इसमें कोई संदेहही नहीं है।

अर्थात् कुल ३३ ही देवताएं हैं ऐसी बात नहीं है। इनसे भिन्न उक्त अग्न्यादि देव हैं। और ढूंडनेपर अधिक भी मिल सकते हैं। वेदमें भी ३३ देवताओंसे भिन्न कई अधिक देव हैं।

इस प्रकार वेदका मंतव्य ३३ देवताओंके विषयमें देख लिया। अब ब्राह्मण ग्रंथोंमें इन देवताओंके विषयमें जो उल्लेख आगये हैं उनका विचार करेंगे। —

[९] ३३ देवताओंके विषयमें ब्राह्मण-ग्रंथोंकी संमति ।

ऐतरेय ब्राह्मण ।

ऐतरेय ब्राह्मणमें ३३ देवताओंके विषयमें निम्न वचन हैं—

त्रयस्त्रिंशद्वै देवा अष्टौ वसव एकादश
रुद्राः द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्च ।

ऐ. ब्रा. १।१०॥; २।३७॥

' निश्चयसे देव ३३ हैं, आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, प्रजापति और वषट्कार मिलकर सब देव ३३ हैं । ' परंतु निम्न वचनके अनुसार ६६ देव होते हैं ।

६६ देवता ।

त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः सोमपाः । त्रयस्त्रिंशदसोमपाः ॥
अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च
वषट्कारश्चैते देवाः सोमपः । एकादश प्रयाजा
एकादशानुयाजा एकादशोपयाजा एते असोमपाः ॥

ऐ. ब्रा. २।१८

'निश्चयसे ३३ देव सोमपान करनेवाले हैं और ३३ देव सोमपान न करनेवाले हैं। आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, प्रजापति और वषट्कार ये ३३ देव सोमपान करनेवाले हैं तथा ग्यारह प्रयाज, ग्यारह अनुयाज और ग्यारह उपयाज मिलकर ३३ देव सोमपान न करनेवाले हैं।

(१) **सोमपान करनेवाले ३३ देव**—आठ वसु–शतपथ ब्राह्मणमें (११।६।३।६ में) कहा है कि अग्नि, पृथिवी, वायु, अंतरिक्ष, आदित्य, द्यौः, चंद्रमा और नक्षत्र ये आठ वसु हैं। परंतु म. आपटेके कोशमें निम्न लिखित अष्ट वसु लिखे हैं—

धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवाऽनिलोऽनलः।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोष्टाविति स्मृताः॥

विष्णुपुराण।

आप, ध्रुव, सोम, अहः, अनिल (वायु), अनल (अग्नि), प्रत्यूष, प्रभास ये आठ वसु हैं। अहः के स्थानपर धर अथवा धव ऐसा भी पाठभेद है, इस प्रकार ब्राह्मणग्रंथोंके वसु और पौराणिक ग्रंथोंके वसु भिन्न हैं।

—ग्यारह रुद्र–प्राणिमात्रके अंदर दश प्राण रहते हैं और एक जीवात्मा मिलकर ग्यारह रुद्र होते हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय ये दस प्राण हैं और ग्यारवां आत्मा मिलकर ग्यारह रुद्र होते हैं।

—बारह आदित्य—वर्षके बारह महिने बारह आदित्य कहे जाते हैं।

८ वसु+११ रुद्र+१२ आदित्य मिलकर ३१ देव होते हैं। इनके साथ द्यावा–पृथिवी, इंद्र–प्रजापति, अश्विनौ, प्रजापति–वषट्-कार, इनमेंसे कोई दो मिलाकर ३३ देवोंकी गिनती करते हैं। ब्राह्मणग्रंथोंमें इस विषयमें कोई निश्चय प्रतीत नहीं होता कि कौनसे दो देव मिलाने हैं। अस्तु।

(१) आदित्याः, (२) विश्वेदेवाः. (३) वसवः, (४) तुषिताः, (५) भास्वराः, (६) अनिलाः, (७) महाराजिकाः, (८) साध्याः, (९) रुद्राः इतने नौ '**गणदेव**' हैं, उनमें 'आदित्य, रुद्र और वसु' इन तीनोंका ही यहां ग्रहण किया है, अन्य 'गणदेव' छोड़ दिये हैं, यह बात यहां ध्यानपूर्वक देखने योग्य है। अस्तु। उक्त ३३ देव सोमपान करनेवाले हैं।

(२) **सोमपान न करनेवाले ३३ देव**—११ प्रयाज, ११ अनुयाज, और ११ उपयाज मिलकर ये ३३ देव होते हैं।

११ प्रयाज—समिधा, तनूनपात् किंवा नराशंस, इळा, बर्हिः, देवीर्द्वारः, उषासा नक्ता, दैव्या होतारा, तिस्रो देवीः, त्वष्टा, वन-स्पति, स्वाहाकृतिः देवताओंके आप्रि-मंत्र।

११ अनुयाज—देवीर्द्वारः, उषासा नक्ता, देवी जोष्ट्री, ऊर्जा-

हुती, दैव्या होतारा, तिस्रोदेवीः, बर्हिः, नराशंसः, वनस्पतिः, बर्हिर्वारितीनां, अग्निः स्विष्टकृत् ।

११ उपयाज——समुद्रः, वायुः, सविता, दिवस और रात्री, मित्रावरुण, सोम, यज्ञ, छंद, द्यावापृथिवी, दिव्यमेघः, अग्निः वैश्वानरः ।

ये सोमपान न करनेवाले ३३ देव हैं । परंतु द्यावापृथिवी, आदि कई देव दोनों स्थान पर समानाहि हैं । तथा ये दोनों प्रकारके देव एकत्रित किये जानेपर सब ६६ होते हैं, इस बातको भी भूलना नहीं चाहिए । ऐतरेय ब्राह्मणके देवताओंके विषयमें इस समय इतनाही लिखना पर्याप्त है । अब शतपथ ब्राह्मणकी ३३ देवताओंकी गिनती देखेंगे—

शतपथ ब्राह्मणमें ३३ देवता ।

"**ये देवासो दिव्येकादश स्थ०** ।" यह पूर्वोक्त ऋग्यजुर्वेदका मंत्र शत० ब्रा० ४।२।२।९ में आगया है। इससे सिद्ध होता है, कि पृथिवी अंतरिक्ष और द्यु लोकमें ग्यारह ग्यारह देव हैं, यह वेदका मंतव्य शतपथ ब्राह्मणके कर्ता वाजसनेय याज्ञवल्क्यको ज्ञात था । परंतु ३३ देवताओंका शतप० ब्रा० का स्पष्टीकरण उक्त भावसे थोडासा भिन्न प्रतीत होता है । देखिए—

त्रयो वै देवाः। वसवो रुद्रा आदित्याः ॥

शत० ब्रा० ४।३।५।१

'तीन ही प्रकारके देव हैं, एक वसु, दूसरे रुद्र, और तीसरे आदित्य।' ऐसा कह कर तीन गणदेवोंका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार किया हैः—

अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्या इमे एव द्यावा-पृथिवी त्रयस्त्रिंश्यौ त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः।

शत. ब्रा. ४।५।७।४

त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः ॥

शत. ब्रा. ५।१।१।१३; ५।३।४।२३

'आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य और ये द्यु और पृथिवी मिलकर ३३ देव होते हैं और चौतीसवां प्रजापति है।' अर्थात् इन शतपथके वचनोंसे प्रजापति के समेत ३४ देव हैं ऐसा सिद्ध होता है। ३४ देवोंका उल्लेख शत० ब्रा. में उक्त प्रकार ३ स्थानोंमें स्पष्ट रीतीसे आगया है। परन्तु आगे जाकर इसी शतपथ ब्रा० में प्रजापतिकी गिनती ३३ देवोंमें की गई है। देखिए—

कतमे त्रयस्त्रिंशदित्यष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादि-त्यास्त एकत्रिंशदिंद्रश्चैव प्रजापतिश्च त्रयस्त्रिंशाविति ॥ ५ ॥

कतम इंद्रः कतमः प्रजापतिरिति । स्तनयित्नुरेवेन्द्रो यज्ञः प्रजापतिरिति कतमस्तनयित्नुरित्यशनिरिति कतमो यज्ञः पशव इति ॥ ९ ॥

शत. ब्रा. ११।७।१

कौनसे ३३ देव हैं ? ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, मिलकर इकत्तीस देव होते हैं और इंद्र और प्रजापति मिलकर ३३ होते हैं। कौनसा इंद्र और कौनसा प्रजापति है ? गरजने वाला इंद्र होता है और यज्ञ प्रजापति है। गरजनेवाला देव कौनसा है ? बिजुली है। और यज्ञ कौनसा है ? पशु हैं। "

शतपथके इस वचनमें ३३ देव विद्युत् और यज्ञके साथ वर्णन किये हैं, और पूर्वोक्त वचनमें द्युलोक और पृथिवी लोकके साथ किये हैं, तथा प्रजापतिको ३४ वां देव माना है। एकहि-शतपथमें इसप्रकार दो मत दिये हैं। पता नहीं लगता कि वास्तवमें शतपथकारकी संमति क्या है। यदि प्रजापति ३४ वां देव शतपथके प्रारंभमें था, तो आगे वहहि ३३ वां किसप्रकार बन गया, यह बडी प्रबल शंका यहां होती है। जिसका समाधान इस समय तक नहीं हो सका है।

इस शंकाके अतिरिक्त दूसरी शंका ऐसी है, कि ये ब्राह्मण-ग्रन्थोक्त ३३ देव वेदोक्त ३३ देवोंकी व्यवस्थाके साथ सुसंगत नहीं होते। देखिए। वसु रुद्र आदित्योंका क्रमशः पृथिवी,

अंतरिक्ष, और द्युलोकमें स्थान है। वेदके कथनानुसार हमें प्रत्येक लोकमें ११ देव चाहिए, परंतु ब्राह्मण वचनोंके अनुसार क्रमशः ८, ११, १२, देव होते हैं और दो देव फाल्तु रहते हैं। जिनमेंसे विद्युत् अंतरिक्षमें रहती है और प्रजापतिका स्थान तीनों लोकोंमें माना जा सकता है। तथा बारह मास ये १२ देव मानने पर उनका स्थान द्युलोकमें नहीं माना जा सकता, परंतु सूर्यके साथ बारहमहिनोंका संबंध होनेसे उनका द्युलोकमें स्थान मानने पर भी, वहाँ हमें वेदके अनुसार ११ देव चाहिए न कि १२ चाहिए। तथा द्यावा पृथिवी माननेके पक्षमें द्युलोकमें १३ देव हो जाते हैं। शतपथके अनुसार आठ वसु पृथिवीपरभी नहीं माने जा सकते, क्योंकि अग्नि, पृथिवी, वायु; अंतरिक्ष, आदित्य, द्यौः, चंद्रमा, नक्षत्र ये आठ वसु हैं ऐसा शत. ब्रा-११।७।१ में कहा है। और इनमेंसे अग्नि और पृथिवीके अतिरिक्त कोई भी अन्यदेव पृथिवीपर नहीं माना जा सकता। इस प्रकार सब देवोंकी भीड अंतरिक्षमें और द्युलोकमें हो जाती है और पृथिवी लोकमें ११ देवोंकी गिनती नहीं होती। शतपथानुसार निम्न कोष्टक बनता है—

द्युलोक............(१२ आदित्य)....१२ मास। तथा आदित्य द्यौ, चंद्रमा, नक्षत्र।

अंतरिक्षलोक......(११ रुद्र)........११ प्राण। वायु, अंतरिक्ष। (इन्द्र—विद्युत—अशनिः)

पृथिवी लोक........(८ वसु)..........अग्नि, पृथिवी। (प्रजापतिः—यक्ष—पशवः।)

अष्ट वसुओंका स्थान पृथिवी कह कर भी जो अष्ट वसु गिने हैं वे अन्य लोकोंमें ६ और पृथ्वीपर केवल दो हैं । इस लिये यह ३३ देवोंकी गिनती ठीक नहीं प्रतीत होती । वेदमें स्पष्ट कहा है कि—

१ द्युलोकमें ११ देव हैं,
२ अंतरिक्षमें ११ देव हैं,
३ पृथ्वीमें ११ देव हैं.

वेदके कथनमें किसी प्रकार भी संदेह नहीं प्रतीत होता । शतपथकी भी गिनती सत्य होगी, यदि वह किसी अन्य देवतागणोंकी मानी जा सकेगी । वसु—रुद्र—आदित्योंकी वह गिनती मानी जा सकती है । स्वाध्याय शील पाठकोंको इस बारेमें अधिक खोज करना आवश्यक है । इस समयतक मैं किसी निश्चयतक नहीं पहुंच सका । आज २ वर्ष इसी विषयपर बहुत जोर देनेपर भी निश्चय दिलानेवाले प्रमाण प्राप्त नहीं हुए । शायद आगे प्राप्त होंगे ।

मेरी संमतिमें ३३ देवताओंके कई गण हैं । उनमें वसु—रुद्र—आदित्योंका एक गण है जिसका स्पष्टीकरण उक्त शतपथमें दिया होगा । यद्यपि यह भी समाधान शांतिकारक नहीं है क्योंकि वसु पृथ्वीपर ही होने चाहिए । शतपथब्राह्मणोक्त सब वसु पृथ्वीपर नहीं हैं । इस लिये वैदिक वसु इनसे भिन्न माननेकी आवश्यकता है क्योंकि वसुओंका पृथिवी स्थान निश्चित है ।

ऐतरये और शतपथके कथनमें ऐकमत्य नहीं है । देखिए—

ऐतरेय ब्राह्मण—८ वसु + ११ रुद्र + १२ आदित्य + प्रजापति और वषट् कार = ३३ देव ।

शतपथ ब्राह्मण—८ वसु + ११ रुद्र + १२ आदित्य + २ द्यावा पृथिवी=३३ देव + १ प्रजापति=३४ देव ।

" " —८ वसु + ११ रुद्र + १२ आदित्य + १ इंद्र (विद्युत्) + १ प्रजापति (यज्ञ) =३३ देव ।

वेद्का कथन—११ पृथ्वीवर + ११ अंतरिक्षमें + ११ द्युलोक में = मिलकर = ३३ देव ।

इससे पाठक देख सकते हैं कि वेदके कथनका ब्राह्मणोंके स्पष्टीकरणके साथ कोई संबंध नहीं । इस ब्राह्मणग्रंथके कथनपर कई आक्षेप आ सकते हैं—

(१) द्यावा–पृथिवीको ३३ देवताओंमें गिनना सर्वथा असंभव है क्यों कि पृथ्वीपर ग्यारह देव चाहिए, तथा द्युलोकमें ११ देव चाहिए, न कि पृथिवी और द्युलोकके समेत ११ या ३३ गिनने हैं।

(२) उक्त कथनसे पृथ्वीपर ११ देव प्राप्त नहीं होते हैं । उक्त कथनसे पृथ्वीपर दो तीन देव हि प्राप्त हो रहे हैं ।

(३) षट्कारके देव होनेमें शंका ही है ।

(४) प्रजापतिको ३३ के अंदर गिनना उचित है या बाहर गिनना उचित है इस विषयमें कोई निश्चय नहीं ।

अस्तु इस प्रकार ब्राह्मणग्रंथोंका स्पष्टीकरण ठीक प्रतीत नही होता है। इसलिये वेदके मंत्रका स्पष्टीकरण हमें वेदमेंहि देखना उचित है।

३३ देवताओंका विचार करनेके समय निम्न बचन देखने योग्य है—

देवोंकी धर्म पत्नियां।

ता ह ता ओषधयः एवौषधयो वै देवानां
पत्न्यः ओषधीभिर्हीदं सर्वं हितम् ॥

शत. ६।५।४।४

'यह औषधियां हैं। औषधियां निश्चयसे देवोंकी पत्नियां हैं क्योंकि औषधियोंद्वारा यह सब ठीक रखा जाता है।' यहां धर्म-पत्नी शब्द आलंकारिक प्रतीत होता है। परंतु प्रत्येक देवके साथ धर्मपत्नीकी कल्पना अवश्य है। अलंकाररूपसे हो अथवा किसी अन्य रीतिसे हो। देवोंका निश्चय करनेके समय उनके धर्मपत्नी-योंकाभी विचार अवश्य होना चाहिए।

देवोंके हृदय।

अग्निर्वायुरादित्य एतानि
ह तानि देवानां हृदयानि

शत. ९।१।१।२२

‘ अग्नि, वायु और आदित्य ये देवोंके हृदय हैं । ’ यहांका हृदय शब्दभी आलंकारिक प्रतीत होता है । परंतु अन्य देवताओंका विचार और निश्चय करनेके समय यह हृदयकी कल्पना निःसंदेह मार्ग बता सकती है । जिस प्रकार शरीरमें हृदय होता है उस प्रकार ये तीन देव अन्य देवोंमें मुख्य हैं, अन्योंको शक्ति देनेवाले हैं इत्यादि भाव यहां स्पष्ट है । तथा—

दस देवताएँ ।

शत० ब्रा० १३।१।३।३ में (१) अग्नि, (२) सोम, (३) आपः (४) साविता (५) वायु, (६) विष्णु; (७) इन्द्र, (८) बृहस्पती (९) मित्र (१०) वरुण इन दस देवताओंके लिये स्वाहा लिखकर कहा है कि—

एतावन्तो वै सर्वे देवाः ॥

शत. १३।१।३।३

‘ इतनेही निश्चयसे सब देव हैं । ’ इसका भावार्थ अवश्य ढूंढना चाहिए । यह कदाचित् ‘ विश्वेदेवाः ’ का स्पष्टीकरण होगा । परंतु इस विषयमें इतनेहि विचारसे कुछ निश्चयात्मक बात नहीं कही जा सकती ।

पाठकोंको इन सब बातोंका अवश्य विचार करना चाहिए । वैदिक वाङ्मयसे अर्थात् चार वेद और ब्राह्मणग्रंथोंसे देवताविषयक

सब वचनका संग्रह करके एक ग्रंथ निर्माण करनेका कार्य इस समय 'स्वाध्यायमंडल' द्वारा हो रहा है। आशा है कि आगामी वर्ष तक पाठकोंके सामने वह ग्रंथ आजायगा।

देवताका निश्चय करना बड़ा कठिन कार्य है। यह कार्य एकहि मनुष्य कर नहीं सकता। इस कार्यकी पूर्तिके लिये अनेक विद्वानोंको कटिबद्ध होकर लगना आवश्यक है। यदि इस निबंधके पढनेसे विद्वानोंकी इस विषयकी खोज करनेके लिये प्रवृत्ति होगई तो मुझे बडा हर्ष होगा। जो स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट करना चाहते हैं वे वैसा अवश्य करें, परंतु यदि कोई विद्वान् अपने विचार मेरे पास लिख भेजेंगे, तो मैं उनको उस पुस्तकमें अवश्य स्थान दूंगा। आशा है कि स्वाध्यायशील विद्वान् इस कार्यमें सहायता देंगे॥

परिशिष्ट १.

अंतर्यामि ब्राह्मण।

पूर्वोक्त ३३ देवताओंके विचारमें प्रयाज, अनुयाज और उपयाज ये सोमपान न करनेवाले ३३ देव ऐतरेय ब्रा० के अनुसार कहे हैं ।जो ऐतरेय आदि ब्राह्मणके अनुसार 'अ–सोम–प' ३३ देव होते हैं पूर्वस्थलमें दिये हैं। अब अंतर्यामि ब्राह्मणके अनुसार जो बनते हैं निम्न स्थलमें दिये हैं। (यह कोष्टक 'गुरु–मंत्र–महिना' नामक पुस्तकमें श्री. म. शिवकर बापूजी तालपदे महोदयजीने दिया है। पृ. १०० देखिए)

शतपथका वचन	प्रयाजाः	अनुयाजाः	उपयाजाः
पृथिवी०	प्रधान	पृथिवी	गंध
अप्सु०	प्रकृति	अपः	रसः
अग्नौ०	महत्तत्व	तेज–वायु	रूप–स्पर्श
अंतरिक्षे०	रजः	आकाश	शब्द
वायौ०	पंचप्राण पंचउपप्राण	पंचज्ञानेंद्रिय पंचकर्मेंद्रिय	प्राण अपान
दिवि०	अदिति	दिवी	निवार्त
आदित्ये०	इंद्र	आदित्य	सूर्य

शतपथका वचन	प्रयाजाः	अनुयाजाः	उपयाजाः
दिक्षु	व्योमन्	दिशः	सूर्य-रश्मि
चंद्रतारके०	नक्षत्र-वायु	चंद्रतारक	चंद्र, रश्मि, केतवः
आकाशे	अग्निः धर्मवान् वायुः	आकाश	वायुमंडल
तमसि०	जल धर्मवान् वायुः	तमः	,,
तेजसि०	गंध-धर्मवान् पृथिवी	तेज	अग्निज्वाला
आत्मनि०	परमात्मा	जीवात्मा	लिंगशरीर
सर्वभूतेषु०	सर्वभूत	विविध बीज	विविधयोनी
प्राणे०	गंधन प्राण	गंध	नासिका (प्राण)
वाचि०	रसन ,,	स्वाद	जिह्वा (वाक्
चक्षुषि०	तेजन ,,	रूप	चक्षु
श्रोत्रे०	नादन ,,	शब्द	श्रोत्र
मनसि०	अशन ,,	मन	१४ लोक
त्वचि०	स्पर्शन ,,	स्पर्श	त्वचा
विज्ञाने०	भावना	विज्ञान	बुद्धि
तेजसि०	आत्मतेजः	रेत	शुक्र

म. शिवकरजीका यह पुस्तक सं. १९७२ में छपा है। निःसंदेह म. शिवकरजी वैदिक पदोंकी संगति लगानेमें बडे प्रवीण आर्य थे और उनके बनाये कई कोष्टक बडे उत्तम मार्गदर्शक हैं, तथापि इस कोष्टकका परिज्ञान ठीक रीतिसे इस समयतक मुझे ज्ञात

नहीं हुआ। ऐतरेयब्राह्मणके प्रयाज, अनुयाज, उपयाज प्रत्येक ११।११ हैं। परंतु यहां अधिक हैं। तथा शतपथ और बृहदारण्यक उपनिषदके अंतर्यामि ब्राह्मणसे इस कोष्टकके नामोंका कोई पता नहीं चलता। पाठक शतपथब्राह्मणमें कांड १४।६।७।७—३० तक अथवा बृहदारण्यक उपनिषदमें अ० ३।७।२—२३ तक मंत्र देखें। यह ही अंतर्यामि ब्राह्मण है। यदि कोई पता चला तो प्रसिद्ध करें। यह कोष्टक विचारार्थ सबके सन्मुख रखा है। मैं इस समय इस कोष्टक पर कोई राय नहीं दे सकता॥

परिशिष्ट २.

वैदिकदेवता।

वेदमें सूक्तोंके देवता निम्न प्रकार हैं। ३३ देवताओंका विचार करनेके समय सब देवताओंका भी अवश्य अनुसंधान रखना चाहिए। इसलिये वेदमें आये देवताओंके नाम यहां देता हूं—

(१) अग्नि,	(२) वायु,	(३) इंद्रावरुणौ,
(४) मित्रावरुणौ,	(५) अश्विनौ,	(६) इन्द्र,
(७) विश्वे देव,	(८) सरस्वती;	(९) मरुत्,
(१०) आप्रि,	(११) ऋतु,	(१२) त्वष्टा,
(१३) ब्रह्मणस्पति,	(१४) इन्द्रासोमौ,	(१५) दक्षिणा,

(१६) अग्नामरुतौ, (१७) ऋभु, (१८) इंद्राग्नी,
(१९) सविता, (२०) इंद्राणी, (२१) वरुणानी,
(२२) अग्नायी, (२३) द्यावापृथिवी, (२४) पृथिवी,
(२५) विष्णुः, (२६) इंद्रवायू, (२७) पूषा,
(२८) आपः, (२९) उलूखलमुसले, (३०) उषा,
(३१) रात्रिः, (३२) यूपः (३३) अर्यमा,
(३४) आदित्य, (३५) सोम, (३६) सूर्य,
(३७) वैश्वानरो अग्निः, (३८) अग्निषोमौ, (३९) देवाः,
(४०) अदितिः, (४१) सिंधुः, (४२) उषासानक्ता
(४३) दान, (४४) भावयव्य, (४५) रोमशा,
(४६) इंदु, (४७) इंद्रापर्वत (४८) बृहस्पतिः
(४९) इन्द्राविष्णू, (५०) अश्वः, (५१) वाक्,
(५२) कालः, (५३) साध्याः, (५४) सरस्वान्,
(५५) राति, (५६) अन्नं, (५७) तृणं,
(५८) राका, (५९) सिनीवाली, (६०) अपान्नपात्,
(६१) कपिंजल, (६२) वैश्वानर, (६३) नद्यः,
(६४) विश्वामित्र, (६५) पर्वत, (६६) अग्नी रक्षोहा,
(६७) सोमकः, (६८) वामदेव, (६९) श्येन,
(७०) दधिक्रावा, (७१) त्रसदस्यु, (७२) इन्द्राबृहस्पती
(७३) क्षेत्रपति, (७४) शुन, (७५) सीर,
(७६) सिता, (७७) गावः, (७८) घृत,
(७९) उषणा (८०) रुद्र, (८१) देवपत्न्यः,

(८२) पर्जन्य,	(८३) प्रस्तोक,	(८४) रथ,
(८५) पृश्नि,	(८६) वर्म,	(८७) धनुः,
(८८) ज्या	(८९) आर्त्नी,	(९०) इषुधि,
(९१) सारथि,	(९२) रश्मि,	(९३) रथगोपा,
(९४) प्रतोद	(९५) हस्तघ्नः	(९६) युद्धभूमिः
(९७) कवच,	(९८) अहिः,	(९९) अहिर्बुध्न्य,
(१००) भग,	(१०१) वाजिन्	(१०२) वास्तोष्पति,
(१०३) मंडूक,	(१०४) ग्रावाणः;	(१०५) वातः
(१०६) यजमान,	(१०७) यजमानपत्नी	(१०८) पवमान,
(१०९) पवमानःसोम.,	(११०) अध्येता,	(१११) यम,
(११२) यमी	(११३) पितरः	(११४) श्वानौ,
(११५) सरमा,	(११६) सरण्यू,	(११७) मृत्यु,
(११८) धाता,	(११९) पितृमेध,	(१२०) प्रजापति,
(१२१) वसुक्र,	(१२२) कुरुश्रवण,	(१२३) उपमश्रवः
(१२४) अक्षाः,	(१२५) कृषिः	(१२६) इन्द्रो वैकुंठः,
(१२७) देवाः	(१२८) मनः,	(१२९) निर्ऋति,
(१३०) असुनीति,	(१३१) असमाति,	(१३२) हस्त,
(१३३) आंगिरसः,	(१३४) पथ्यास्वस्तिः	(१३५) ज्ञान,
(१३६) विश्वकर्मा,	(१३७) मन्यु,	(१३८) सूर्या,
(१३९) अर्क,	(१४०) चंद्रः	(१४१) आशीः
(१४२) वृषाकपि,	(१४३) पुरुष,	(१४४) उर्वशी,
(१४५) पुरूरवा,	(१४६) औषधिः	(१४७) ऋत्विजः,

(१४८) द्रुघन, (१४९) अप्वा, (१५०) पणिः,
(१५१) लव, (१५२) कः, (१५३) वेन,
(१५४) भाववृत्तं, (१५५) केशिन, (१५६) सपत्नघ्न,
(१५७) अरण्यानि, (१५८) श्रद्धा, (१५९) अलक्ष्मीघ्नं,
(१६०) शची पौलोमी, (१६१) यक्ष्मनाशन (१६२) प्रायश्चित्तं,
(१६३) दुष्वप्न्यघ्नं, (१६४) राजा, (१६५) मायाभेदः,
(१६६) तार्क्ष्य, (१६७) होता, (१६८) गर्भार्थाशीः,
(१६९) जातवेदा अग्निः, (१७०) सर्पराज्ञी, (१७१) संज्ञानं.

इतने ऋग्वेदमें देवताएं हैं। अथर्ववेदमें और भी अधिक हैं। अथर्वसर्वानुक्रम मेरे पास न होनेके कारण अथर्ववेदके देवताओंके नाम मैं यहां उद्धृत नहीं कर सका। यजु अ. ३० में १८४ देवताओंके नाम आये हैं, जिनका स्पष्टीकरण अलग छप चुका है। पाठक उस पुस्तकें अथवा यजु. अ. ३० में स्वयं देखें। इनके अतिरिक्त यजुर्वेदमें भी और थोडेसे अधिक देव हैं।

चारों वेदोंमें आये हुए देवताओंके नाम लगभग चारसौं हो सकते हैं ऐसा मेरा ख्याल है। हमारे प्रचलित ३३ देवताएं इनमें अंतर्भूत हैं या इनसे बाहर हैं, इसका भी अवश्य विचार होना चाहिए।

३३ देवताओंका विषय प्रस्तावरूपमें पाठकोंके सन्मुख रखा है। विचारी विद्वान् इस विषयपर अधिक विचार करें और अपनी संमतियां प्रसिद्ध करें ॥

[४] धर्म–शिक्षाके ग्रंथ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा। प्रथमभाग। प्रथम श्रेणीकी धर्म शिक्षाके लिये। मू. –) एक आना। (तृतीयवार मुद्रित)

[५] ...

(१) वैदिक राज्य पद्धति। मू. ≡) तीन आने। (द्वितीयवार मुद्रित)

(२) मानवी आयुष्य। मू. ।) चार आने। (द्वितीयवार मुद्रित)

(३) वैदिक सभ्यता। मू. ≡) तीन आने (,,)

(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र। मू. ।) चार आने (द्वितीयवार मुद्रित)